



हिमालय दिवस – 2021

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा 09 सितम्बर, 2021, 'हिमालय दिवस' कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा दिनांक 09 सितम्बर, 2021 को संस्थान के सभागार में हिमालय दिवस – 2021; विषय 'हिमालय का योगदान एवं हमारा उत्तरदायित्व' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों ने प्रत्यक्ष रूप से और कर्मचारियों, शोधार्थियों, संस्थान के शोध केन्द्रों में तैनात कर्मचारियों तथा विभिन्न संस्थानों/विभागों के प्रतिभागियों ने आभासीय मंच "Google Meet" के माध्यम से भाग लिया। डॉ. अश्वनी तपवाल, वैज्ञानिक-एफ ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एस.एस. सामंत, आमंत्रित मुख्य वक्ता प्रोफेसर एस.के. शर्मा, पूर्व कुलपति हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर हिमाचल प्रदेश, सभी वक्ताओं, अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों तथा शोधार्थियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की रूप रेखा प्रस्तुत की।

डॉ. एस.एस. सामंत, निदेशक ने कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुये हिमालय दिवस के इतिहास तथा महत्व पर प्रकाश डाला। हिमालयन दिवस की उत्पत्ति 2010 में हुई लेकिन आयोजन वर्ष 2015 से किया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य हिमालय के संरक्षण के बारे में जागरूकता लाना है। हिमालय की प्राकृतिक सुन्दरता सबको आकर्षित करती है। डॉ. सामंत ने हिमालय क्षेत्र की पौध प्रजातियों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला और कहा कि जैव विविधता जीवन और पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि हिमालय क्षेत्र जैव विविधता का भंडार है, यहाँ 18940 पौधों की प्रजातियाँ हैं, जिसमें से से लगभग 5000 से अधिक प्रजातियाँ आर्थिक महत्व की हैं। हिमालय क्षेत्र की सुन्दरता और विविधता के कारण हमारे देश के वंदे मातरम गीत में इसका वर्णन शश्य-श्यामलाम शब्द के रूप में किया गया है। हिमालय क्षेत्र के जंगल में अलग अलग प्रकार के फल और फूल, देवदार प्रकार के वृक्ष, जड़ी बूटियाँ, वनस्पति और खनिज पदार्थ के साथ-साथ, बाघ, भालू, हिरण आदि जानवर पाये जाते हैं जो हिमालय क्षेत्र की विविधता के बहुत सुन्दर उदाहरण हैं। भारत देश के शिखर पर प्रहरी हिमालय पर्वत तथा इससे बहती नदियाँ जैसे गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र और यांगतेज पर्वतीय एवं मैदानी इलाकों के लिए जीवनदायनी वरदान हैं। उन्होंने कहा कि कुछ पौधों की प्रजातियों में जल्दी फूल आने और फलने की खबरें हैं। तापमान में वृद्धि विभिन्न प्रजातियों को उच्च ऊँचाई पर स्थानांतरित कर रही है। हिमालय की अनूठी पुष्प और पशु संपदा जलवायु परिवर्तन के कारण संरचनात्मक और संरचनागत परिवर्तनों के दौर से गुजर रही है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. एस. के. शर्मा, पूर्व कुलपति, हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर हिमाचल प्रदेश, ने google meet के माध्यम से हिमालय जैव-विविधता: योगदान एवं प्रबंधन (Himalayan Biodiversity – Contribution and Management) पर प्रस्तुतीकरण पेश किया। उन्होंने बताया की दुनिया की जैव विविधता में भारत की जैव विविधता का लगभग 8 प्रतिशत योगदान है। जैव विविधता के 36 हॉट स्पॉट में से चार भारत में पाये जाते हैं जिसमें भारतीय हिमालय क्षेत्र भी है। भारतीय हिमालय क्षेत्र 2500 किलोमीटर लंबा और 80-300 किलोमीटर चौड़ा है। इस भूभाग में देश का 41% प्रतिशत वन क्षेत्र है, जिसमें फूलने वाले पौधों के 8540 प्रजातियाँ हैं, जिसमें से 816 पेड़ 1748 के आसपास औषधियाँ प्रजातियाँ हैं। परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से दुनिया की आधी आबादी प्रकारात्मक संसाधनों पर निर्भर रहती है। हिमालयन क्षेत्र में मानव आवादी का बढ़ता घनत्व, औद्योगिक विकास, जलवायु परिवर्तन, इत्यादी जैसे कारण यहाँ की

पारिस्थितिकी में तेज़ी से बदलाव ला रहे हैं। उन्होंने कहा कि कुछ पौधों की प्रजातियों में जल्दी फूल आने और फलने की खबरें हैं। तापमान में वृद्धि विभिन्न प्रजातियों को उच्च ऊंचाई पर स्थानांतरित कर रही है। हिमालय की अनूठी पुष्प और पशु संपदा जलवायु परिवर्तन के कारण संरचनात्मक और संरचनागत परिवर्तनों के दौर से गुजर रही है। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा हिमालयन क्षेत्र के संरक्षण के लिए 'सतत हिमालय परिस्थितिकी तंत्र नेशनल मिशन' का गठन भी किया है जिसका उद्देश्य, हिमालय जैव विविधता, नदियों तथा ग्लेसीयरो का संरक्षण है।

डॉ. पीतांबर सिंह नेगी, वैज्ञानिक-डी ; ने ट्रांस हिमालय में कृषीवानिकी (*Agroforestry in Trans-Himalaya*) प्रणाली पर अपने विचार साझा किये तथा यह बताया कि प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के साथ यह अतिरिक्त जीविका का साधन भी है। उन्होंने ट्रांस हिमालयन क्षेत्र में उपयोग किए जाने कृषि वानिकी मॉडल्स के बारे में भी बताया। ट्रांस हिमालयन क्षेत्र में कृषि वानिकी के लिए पोपलर, सलिक्स एवं जूनीपर वानिकी प्रजातियाँ उपयोगी है। **डॉ. पवन राणा, वैज्ञानिक-ई;** ने हिमालय के विभिन्न कीट-पतंगों के आर्थिक महत्व तथा संरक्षण (*Insect of Himalaya: Economic Importance and Conservation*) पर जानकारी देते हुये बताया कि सभी कीट-पतंगे हानिकारक नहीं होते तथा इनका इस्तेमाल हानिकारक कीड़े एवं पौधों के नियंत्रण के लिए भी किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि भारतीय हिमालयी क्षेत्र में लगभग 26392 कीट प्रजातियाँ पायी जाती है जो वन्य जीव विविधता की 86% संख्या है। इसके अतिरिक्त मिट्टी में पाये जाने वाले कीड़े तथा जीव इसकी उर्वरता तथा पौषक तत्वों के चक्रण में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक -जी, समूह समन्वयक अनुसंधान ने समृद्धि के लिए हिमालय क्यों मायने रखता है? (*Why Himalaya Matters for Prosperity*) विषय पर जानकारी साझा करते हुये कहा कि हिमालय भारत का शरीर और आत्मा है। हिमालय देश के लगभग 16% क्षेत्र में है जहां देश की 4% जनसंख्या वास करती हैं। परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से देश की 40 करोड़ जनसंख्या को सपोर्ट करता है। भारत के सुरक्षा से लेकर देश की आजीविका में हिमालय भारत की राष्ट्रीय पर्वत प्रणाली का निर्माण करता है। हिमालय क्षेत्र वनों का भंडार है तथा इन क्षेत्रों में उच्च कोटी के औषधीय पौधे पाये जाते हैं। गिरिराज हिमालय न केवल बहुत सी छोटी-बड़ी नदियों का उद्गम स्थल है बल्कि यह देश की जलवायु स्थिति में भी मुख्य भूमिका निभाता है। उन्होंने आगे बताया कि हिमालय भारत की सबसे प्रमुख भौगोलिक विशेषता है। दुनिया में कहीं भी किसी अन्य पर्वत श्रृंखला ने लोगों के जीवन को प्रभावित नहीं किया है और एक राष्ट्र के भाग्य को आकार दिया है। अतः प्रकृति के संतुलन तथा जीवन चक्र को बनाए रखने के लिए इसका संरक्षण बहुत आवश्यक है।

डॉ॰ सामंत, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने आयोजन से जुड़े सभी लोगों के प्रयासों की सरहाना की तथा सभी वक्ताओं के योगदान को संक्षेप में बताते हुये उनका धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के आयोजन में **डॉ. अश्वनी तपवाल,** प्रमुख विस्तार प्रभाग (लिक अधिकारी), **डॉ॰ जोगिंदर चौहान,** मुख्य तकनीकी अधिकारी, **श्री दिनेश धीमान,** निदेशक के निजी सचिव एवं **श्रीमति सपना ठाकुर** ने प्रमुख भूमिका निभाई। **डॉ॰सामंत,** निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने आयोजन से जुड़े सभी लोगों के प्रयासों की सरहाना की तथा सभी वक्ताओं के योगदान को संक्षेप में बताते हुये उनका धन्यवाद दिया। अंत में **डॉ. अश्वनी तपवाल** ने संस्थान के निदेशक महोदय, मुख्य वक्ता, अन्य सभी वक्ताओं, वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, शोधार्थियों तथा बाहरी संस्थानों/विभागों से सभी का कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम की झलकियाँ





ह.व. अ. स.

मीडिया कवरेज़

